Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक स्वतन्त्रता एवं आत्मविश्वास का अध्ययन

हेमलता कुमावत, शोधार्थी (शिक्षा विभाग)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान
डॉ मंजू शर्मा, विभागाध्यक्ष (शिक्षा विभाग)
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर राजस्थान

सारांशः–

भारत सरकार द्वारा महिला विकास के क्षेत्र में अनेक प्रयास करने के बाद भी वर्तमान में महिला समस्याओं में निरन्तर वृद्धि हो रही है। महिलाओं के विकास उत्थान के लिए समान अवसर व अन्य संधानिक अधिकार मिले हुए परन्तु आज भी समाज में महिलाओं को पुरूषों के समान स्थिति प्राप्त नही हुई है। इसका मुख्य कारण नारी में आत्मविश्वास की कमी है। भारतीय परम्पराओं रीति–रिवाजों, सामाजिक मान्यताओं ने स्त्री को सदैव बन्धनों में रखा है और उसके आत्मविश्वास को कम किया है। वर्तमान में महिलाओं के शिक्षित होने आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने, अनेक संवैधानिक अधिकार प्राप्त होने के बाद भी महिला समस्याओं में निरन्तर वृद्धि एवं महिला आत्मविश्वास व सामाजिक स्वतन्त्रता में कमी होती जा रही है।

सशक्त भारत के लिए सशक्त नारी की आवश्यकता है। इसके लिए नारी को समाजिक बन्धनों से स्वतन्त्रता प्रदान करनी होगी उसमें आत्मविश्वास पैदा करना होगा। ये पक्ष अध्ययन की आवश्यकताओं को स्पष्ट करते है।

मुख्य शब्दः– महिला, आत्मविश्वास, सामाजिक स्वतन्त्रता, महिला समस्या, शिक्षा

प्रस्तावनाः–

एक राष्ट्र समाज और परिवार के विकास में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में नारी प्रत्येक क्षेत्र शिक्षा, राजनीती सेना चिकित्सा, तकनीकी अन्तरिक्ष या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सेवायें देकर देश के उत्थान में योगदान दे रही है। साथ ही अपनी परिवार की जिम्मेदारियों को भी बहुत अच्छे से निभा रही है। परन्तु फिर भी समाज में महिलाओं की स्थिति, पुरूषों को मुकाबले निम्न है। हम सभी जानते है कि भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज है महिलाऐं जीवन के प्रत्येक क्षेत्रमें पुरूषों से कन्धे से कन्धे मिलाकर चल रही है। फिर भी उन्हें पुरूषों से कम माना जाता है। आज भी भारतीय समाज में नारी की उपेक्षा की जाती है।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर पूर्व वैदिक काल तक नारी की शक्ति का उपयोग सृष्टि को सुन्दर बनाने के लिए होता रहा है। नारी पुरूष के समान जीवन के सभी क्षैत्रों में अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का इस्तेमाल करती रही है।

Copyright@2021Authors

भारत में उन्नीसवीं शताब्दी में नारी शक्ति के जागरण के लिए राजनैतिक स्तर पर, संविधान द्वारा एवं स्वतन्त्र संगठनों के माध्यम से अनेक प्रयास किए गए। अनेक नारियों ने तो पुरूषों से आगे बढकर सफलता के प्रतिमान स्थापित किये है। देश के विकास के लिए महिला शिक्षा को बढावा देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक महिलाओं की स्थिति कभी भी पुरूषों के समान नही रही है। समाज द्वारा उत्पन्न इस लैगिंक भेदभाव के परिणास्वरूप समाज में महिलाओं के समस्याओं का अम्बार सा लग गया। आधुनिक समय में महिलाओं से जुडी समस्याओं पर बहस हर जगह देखी जा सकती है। लेकिन फिर भी महिलाओं से सम्बन्धित समस्याए निरन्तर बढती जा रही है। आधुनिक विश्व के सभी समाजों में आज भी महिलाओं को पुरूषों के समान सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त नही है। समाज में अधिक अधिकार, संसाधन और निर्णय लेने की शक्ति पुरूषों को ही प्राप्त है। कानूनी रूप से महिलाओं को पुरूषों के समान स्वतन्त्रता व समानता प्राप्त तो है परन्तु व्यवहारिक रूप से आज भी महिलाओं को पूर्ण सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं है। नारी को केवल परम्परागत भूमिकाओं में रखा गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेती सम्बन्धी अधिकांश कार्य महिलाओं द्वारा करने पर भी उन्हें कृषक का दर्जा नही दिया गया। पुरूषों के समान कार्य करने पर भी उन्हें पुरूषों से कम वेतन, कम मजदूरी दी जाती है। नौकरियों में भर्ती व पदौन्नति में भी महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है।

महिला को सामाजिक स्वतन्त्रता मुख्य रूप से नीति निर्णय एवं निर्णय प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी है। यह एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा महिला विकास की संभावनाओं के नये द्वार खुलेगें तथा महिला आत्मविश्वासी बनेगी व नारी को प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने हेतु अनेक अवसर प्राप्त होगें। राष्ट्र व समाज के विकास के लिए स्त्री व पुरूष दोनो को बराबर सहभागिता की आवश्यकता है। भारत में नारी को देवी, शक्ति का रूप माना जाता है। उसी भारत देश में आज भी नारी को स्वतन्त्रता प्राप्त नही हो पाई है। स्वतन्त्रता की आड़ में आज भी नारी का शोषण हो रहा है। अनेक कुरीतियों के अनावश्यक बंधनों में बंधकर नारी की स्वतन्त्रता पर रोक लगाने के प्रयास किये जा रहे है। आज भी नारी की सामाजिक स्वतन्त्रता को रोकने के लिए अनेक कायदे रीति–रिवाज है। नारी के बाहर जाने पर भी उसकी पहरेदारी होती है। घर हो चाहे बाहर सभी जगह नारी बन्धनों में जकड़ी हुई है। मंदिर और मस्जिद में महिलाओं के प्रवेश को लेकर समाज में विवाद होने पर न्यायालय को निर्णय करना पड़ता है।

महिला शिक्षित होते हुए भी अपने निर्णयों के लिए अपने पिता, भाई या पति पर निर्भर है। एक उच्च शिक्षा प्राप्त महिला भी अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतन्त्र नहीं है। विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा प्राप्त महिला भी अपने लिए निर्णय स्वयं नही ले पाती है। महिला शिक्षा, व्यापार, नौकरी, जीवन यापन से सम्बन्धित निर्णयों के लिए पुरूषों पर ही निर्भर है। इसका मुख्य कारण उनमें आत्मविश्वास की कमी तथा सामाजिक रूप से बन्धनों में जकडे होना है। आत्मविश्वास ही मनुष्य में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करता है तथा वह उसे आशावादी बनाता है। आम्मविश्वास के बल पर ही कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स ब्राह्मण्ड तक पहुॅच सकी व दोनो पैर ट्रेन से कट जाने के बाद भी अरूणिमा सिन्हा ने एवरेस्ट फतह किया। आत्मविश्वास के बल पर ही जीवन में बडी सफलता प्राप्त की जा सकती है और आत्मविश्वास के बल पर ही नारी सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकती है सामाजिक बन्धनों से मुक्त हो सकती है। जो राजनैतिक व संवैधानिक अधिकार महिलाओं को प्राप्त है उनका उपयोग नारी आत्मविश्वास के बल पर ही कर सकती है।

Copyright@2021Authors

Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

महिला दिवस बनाने की सार्थकता तभी होगी जब महिला स्वयं आत्मविश्वासी होगी, महिला सामाजिक रूप से स्वतन्त्र होगी उनमें चेतना जाग्रत होगी। सशक्त समाज के लिए राष्ट्र के उत्थान के लिए नारी का सशक्त होना आवश्यक है इसके लिए उन्हें सामाजिक बन्धनों से स्वतन्त्रता प्रदान करनी होगी उसमें आत्मविश्वास पैदा करना होगा। महिलाओं को अपनी योग्यता, रूचि, क्षमता, शक्तियों पर भरोसा करना होगा। सामाजिक रूढियों से स्वतन्त्र होना होगा। आज हमारे देश में जो अनेको समस्यायें है इन समस्याओं का समाधान महिलाओं में आत्मविश्वास जाग्रत कर व सामाजिक स्वतन्त्रता द्वारा ही सम्भव है।

तकनीकी शब्दो की व्याख्याः–

सामाजिक स्वतन्त्रताः– डॉ एल. आई भूषण द्वारा निर्मित नारी सामाजिक स्वतन्त्रता मेन्यूअल के अनुसार '' सामाजिक स्वतन्त्रता से तात्पर्य सामाजिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों और उन सामाजिक भूमिकाओं से मुक्त होने की महिलाओं की इच्छा जो उन्हें समाज में निम्न दर्जे की स्थिति प्रदान करते है।''

सामाजिक स्वतन्त्रता सामाजिक बन्धनों, वर्जनाओं से मुक्ति है उन सभी परम्पराओं रीति–रिवाजों से मुक्ति है जो एक महिला को पुरूषों से कमतर करते है। महिला होने के नाते उसे पुरूष से निम्न स्तर जीवन जीने के लिए बाध्य करते है।

आत्म विश्वास

बासवाना के शब्दों में– साधारणतः आत्मविश्वास उसे कहते है जिसमें व्यक्ति अपने ज्ञान को प्रभावी रूप में लागू करता है और परिस्थिति की बाधाओं से अपने आपको बाहर निकालता है और चीजो को सही कर देता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति सामाजिक रूप से योग्य, भावनात्मक रूप से पर्याप्त बुद्विमान, सफल, सन्तुष्ट निर्णायक, आशावादी, स्वतन्त्र अपने आप पर विश्वास करने वाला व आगे चलकर नेतृत्व करने वाला होता है।

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य अध्ययनः

सोनी मधु (2017) ने ''सामान्य एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की नारी की सामाजिक स्वतन्त्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृति का अध्ययन'' पर शोध अध्ययन किया और यह पाया कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति की छात्राओं की नारी की सामाजिक स्वतन्त्रता के प्रति अभिवृति में असार्थक अन्तर पाया जाता है जबकि सामाजिक समानता के प्रति अभिवृति में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

भैमई एवं देवी (2013) ने इम्फाल एवं मणिपुर में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन किया अध्ययन से ज्ञात हुआ जो महिलाये स्वयं सहायता समूह जैसे कार्यक्रमों में जुडी हुई है, उनमें आत्मविश्वास स्तर अधिक है।

कौर, नवनीत (2015) Social Freedom Among Adolescent Girl Student of Chandigarh'' अध्ययन में पाया कि पंजाब विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक स्वतन्त्रता अधिक है जबकि पंजाब विश्वविद्यालय से सम्बन्धित महाविद्यालय की छात्राओं में कम सामाजिक स्वतन्त्रता है।

समस्या कथन–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन इस प्रकार है– ''विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में आत्मविश्वास एवं सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन''

Copyright@2021Authors

Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

समस्या के उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये–

1. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
2. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पना का निर्माण किया गया–

1. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

न्यादर्श–

विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत 600 छात्राओं में 300 महिला विश्वविद्यालयों व 300 सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया।

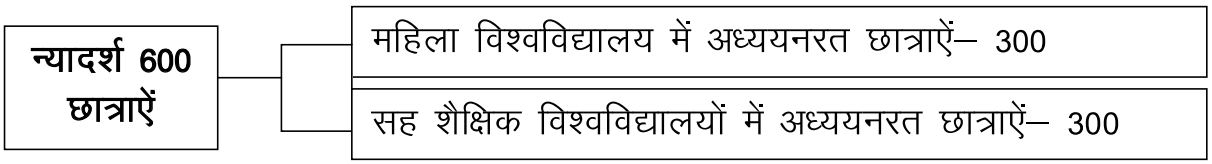

उपकरण–

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के संकलन हेतु प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया जो निम्न हैः–

1. डॉ रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित आत्मविश्वास परीक्षण
2. एल आई भूषण द्वारा निर्मित महिला सामाजिक स्वतन्त्रता परीक्षण

सारणी–1

महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर का विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/

Copyright@2021Authors

Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

	(N)	(M)	(S.D.)	Value		अस्वीकृत
महिला विश्वविद्यालयों की छात्राऐं	300	39.76	6.80	2.45	0.5 स्तर–1.66 .01 स्तर–2.36	अस्वीकृत अस्वीकृत
सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की छात्राऐं	300	42.49	5.69		सार्थक अन्तर है	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि महिला विश्वविद्यालय की महिलाओं और सह शैक्षिक विश्वविद्यालय की महिलाओं के आत्मविश्वास से सम्बन्धी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 39.76 तथा 42.49 प्राप्त हुआ है।

दोनो समूहो के विधार्थीयों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमशः 6.80 तथा 5. 69 प्राप्त हुआ। दोनो समूहों के विधार्थीयों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रातिक अनुपात मान 2.45 प्राप्त हुआ। .05 स्तर पर सार्थकता मान 1.66 एवं .01 स्तर पर सार्थकता मान 2. 36 है। यह सार्थकता के दोनो स्तरों से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

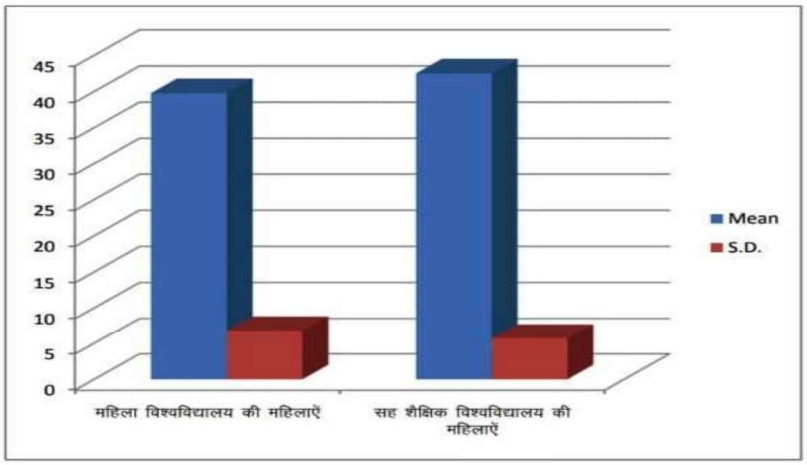

आरेख1– महिला विश्वविधालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के आत्मविश्वास में सार्थक अन्तर का विश्लेषण–

सारणी – 2

महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर का विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक	T	सार्थकता स्तर	स्वीकृत/

Copyright@2021Authors

Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

	(N)	(M)	विचलन (S.D.)	Value		अस्वीकृत
महिला विश्वविद्यालयों की छात्राऐं	300	17.46	2.51	1.47	0.5 स्तर–1.66 .01 स्तर–2.36	स्वीकृत स्वीकृत
सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की छात्राऐं	300	19.50	2.33		सार्थक अन्तर नहीं है	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि महिला विश्वविद्यालयों और सहशैक्षिक विश्वविद्यालयों की महिलाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता से सम्बन्धी तथ्यों के आधार पर मध्यमानों की गणना करने से मध्यमान क्रमशः 17. 46 तथा 19.50 प्राप्त हुआ है। इन दोनो समूहो के विधार्थीयों के प्राप्त मध्यमानों के आधार पर गणना द्वारा मानक विचलन क्रमश– 2.51 तथा 2.33 प्राप्त हुआ है। दोनो समूहो के विधार्थीयों के प्राप्त मध्यमानों एवं मानक विचलनों के आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान 1.47 प्राप्त हुआ। 1.05 स्तर पर सार्थकता मान 1.66 तथा 0.01 स्तर पर सार्थकता मान 2.36 है। यह सार्थकता के दोनो स्तरों से कम है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

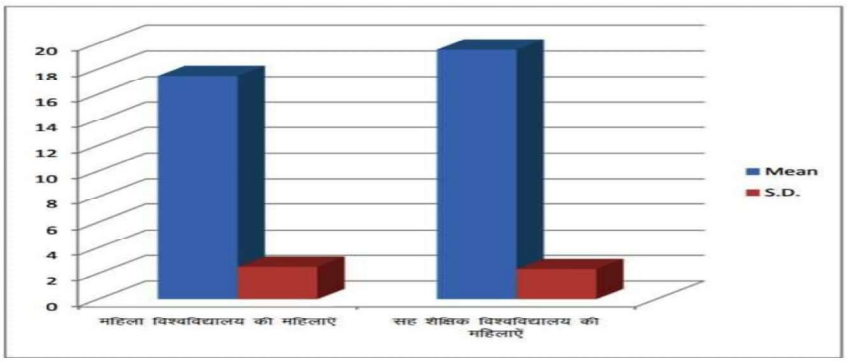

आरेख–2 महिला विश्वविद्यालयों एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की सामाजिक स्वतन्त्रता मे सार्थक अन्तर

परिकल्पना से सम्बन्धित निष्कर्ष–

महिला विश्वविद्यालयों व सहशैक्षिक विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के आत्मविश्वास में अन्तर पाया जाता है। महिला और सहशैक्षिक विश्वविद्यालयों की छात्राओं में यह अन्तर बहुत अधिक भी नही है।

महिला विश्वविद्यालय एवं सह शैक्षिक विश्वविद्यालयों की छात्राओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में अन्तर नही पाया जाता है। महिलाओं में सामाजिक स्वतन्त्रता उनके पारिवारिक वातावरण उनकी पृष्ठभूमि और आत्मप्रत्यय पर निर्भर करती है। इस आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिला विश्वविद्यालय एवं सहशैक्षिक विश्वविद्यालयों की छात्राओं की सामाजिक स्वतन्त्रता में सार्थक अन्तर नही है।

Copyright@2021Authors

Issn: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 1 June 2021

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. शर्मा, जी.एल. सामाजिक मुददे, रावत पब्लिकेशन्स
2. दुबे, श्याम सुन्दर, समसामयिक निबंध, विद्या विहार, दिल्ली
3. चौबे, सरयु प्रसाद, शिक्षा के समाज शास्त्रीय आधार
4. रायजादा, डॉ बी. एस. वर्मा, डॉ वन्दना, शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
5. शर्मा, आर. ए. शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
6. राय पारसनाथ, राय सी. पी. अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा
7. आस्थाना, विपिन तथा अग्रवाल, मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकंन
8. www.n-hindi.webdunia.com
9. Indian Journal of Educational Studies : An Indore disciplinary Journal. Vol. 2, No. 1

Copyright@2021Authors